

अगणितगुणगणभूषित  
अवनीतनयाकामित  
राकाचन्द्रसमानन  
पितृवाक्याश्रितकानन  
प्रियगुहविनिवेदितपद  
तत्क्षालितनिजमृदुपद  
भरद्वाजमुखानन्दक  
चित्रकूटाद्रिनिकेतन

[illegible]

दशरथसन्ततचिन्तित  
कैकेयीतनयार्थित  
विरचितनिजपितृकर्मव  
भरतार्पितनिजपादुक

राम राम जय राजा राम।  
राम राम जय सीता राम॥

दण्डकावनजनपावन  
दुष्टविराधविनाशन  
शरभङ्गसुतीक्ष्णार्चित  
अगस्त्यानुग्रहवर्धित  
गृध्राधिपसंसेवित  
पञ्चवटीतटसुस्थित  
शूर्पणखार्त्तिविधायक  
खरदूषणमुखसूदक  
सीताप्रियहरिणानुग  
मारीचार्तिकृताशुग  
विनष्टसीतान्वेषक  
गृध्राधिपगतिदायक  
कबन्धबाहुच्छेदन  
शबरीदत्तफलाशन

राम राम जय राजा राम।  
राम राम जय सीता राम॥

हनुमत्सेवितनिजपद  
नतसुग्रीवाभीष्टद  
गर्वितवालिसंहारक  
वानरदूतप्रेषक  
हितकरलक्ष्मणसंयुत

राम राम जय राजा राम।  
राम राम जय सीता राम॥

## ॥ सुन्दरकाण्डः ॥

कपिवरसन्ततसंस्मृत	राम
तद्गतिविघ्नध्वंसक	राम
सीताप्राणाधारक	राम
दुष्टदशाननदूषित	राम
शिष्टहनूमद्रूषित	राम
सीतावेदितकाकावन	राम
कृतचूडामणिदर्शन	राम
कपिवरवचनाश्वासित	राम

राम राम जय राजा राम।  
राम राम जय सीता राम॥

## ॥ युद्धकाण्डः ॥

रावणनिधनप्रस्थित	राम
वानरसैन्यसमावृत	राम
शोषितसरिदीशार्थित	राम
विभीषणाभयदायक	राम
पर्वतसेतुनिबन्धक	राम
कुम्भकर्णशिरश्छेदक	राम
राक्षससङ्घविमर्दक	राम
अहिमहिरावणचारण	राम
संहतदशमुखरावण	राम
विधिभवमुखसुरसंस्तुत	राम
खःस्थितदशरथवीक्षित	राम
सीतादर्शनमोदित	राम
अभिषिक्तविभीषणनत	राम
पुष्पकयानारोहण	राम
भरद्वाजाभिनिषेवण	राम
भरतप्राणप्रियकर	राम
साकेतपुरीभूषण	राम
सकलस्वीयसमानत	राम
रत्नलसत्पीठास्थित	राम

पट्टाभिषेकालङ्कृत	राम
पार्थिवकुलसम्मानित	राम
विभीषणार्पितरङ्गक	राम
कीशकुलानुग्रहकर	राम
सकलजीवसंरक्षक	राम
समस्तलोकाधारक	राम

राम राम जय राजा राम।  
राम राम जय सीता राम॥

## ॥ उत्तरकाण्डः ॥

आगतमुनिगणसंस्तुत	राम
विश्रुतदशकण्ठोद्भव	राम
सितालिङ्गननिर्वृत	राम
नीतिसुरक्षितजनपद	राम
विपिनत्याजितजनकज	राम
कारितलवणासुरवध	राम
स्वर्गतशम्बुकसंस्तुत	राम
स्वतनयकुशलवनन्दित	राम
अश्वमेधक्रतुदीक्षित	राम
कालावेदितसुरपद	राम
आयोध्यकजनमुक्तिद	राम
विधिमुखविवुधानन्दक	राम
तेजोमयनिजरूपक	राम
संसृतिबन्धविमोचक	राम
धर्मस्थापनतत्पर	राम
भक्तिपरायणमुक्तिद	राम
सर्वचराचरपालक	राम
सर्वभवामयवारक	राम
वैकुण्ठालयसंस्थित	राम
नित्यानन्दपदस्थित	राम

राम राम जय राजा राम।  
राम राम जय सीता राम॥

॥ इति श्रीमन्नारदविरचितं नामरामायणं सम्पूर्णम् ॥



वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे  
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।  
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्  
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥  
 वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः  
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।  
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्  
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:  
[http://stotrasamhita.net/wiki/Nama\\_Ramayanam](http://stotrasamhita.net/wiki/Nama_Ramayanam).

 generated on **February 28, 2025**

Downloaded from  <http://stotrasamhita.github.io> |  StotraSamhita | [Credits](#)